उच्छल जलधि तरंग

डॉ. अर्पिता अग्रवाल

प्रतिदिन घर के बाहर-भीतर सीढ़ियां आदि सबमर्सिबिल चला कर धोना आम बात है। जो काम एक दो बाल्टी से हो सकता है, उसमें इतना पानी व्यर्थ बहाना क्या बुद्धिमानी है? क्या सबमर्सिबिल चला कर हम ऊर्जा का दुरूपयोग नहीं करते? क्योंकि इन इलाकों में पानी की कमी नहीं होती अतः पानी व्यर्थ करना इनका जन्म सिद्ध अधिकार है।

पुराने ज़माने में कुओं, तालाबों, जोहड़ों से मनुष्य की जल संबंधी ज़रूरतों की आपूर्ति होती थी, इसीलिए मनुष्य इन सब चीज़ों का संरक्षण सामुदायिक रूप से करता था। उदाहरण के लिए कुओं को ढक कर रखना ताकि उसमें बारिश का पानी सीधा न गिरे और धूल गंदगी न गिरे, तालाबों की वर्षा से पहले सफ़ाई करना और उससे निकली मिट्टी से अपने मिट्टी के मकानों को और मज़बूत बनाना ताकि मकान वर्षा ऋतु को झेल सकें आदि। नदियों की स्वच्छता का ध्यान रखा जाता था। प्यास लगने पर कुओं से ठंडा पानी निकाल कर पीना जैसी बातों की तो आज का मानव सिर्फ कल्पना ही कर सकता है।

धीरे-धीरे विकास का पहिया चलता रहा, सीमेंट के मकान बने, सरकारी टंकियों से पानी आने लगा। बिना मेहनत करे ढेर सारा पानी मिलने लगा। कुएं, तालाब, जोहड़ की परवाह अब कौन करे? धीरे-धीरे यह सूखने लगे। कच्ची सड़कें पक्की सड़कों में बदली, रासायनिक उर्वरक आए, मशीने आयी और खेती आधुनिक हो गयी फिर हरित क्रांति की धूम मच गयी। फैक्ट्रियां लगती गई और अपना गंदा पानी नदियों में फेंकती गई। खेतों की सिंचाई के लिए भूगर्भ से जल का दोहन आरंभ हुआ तो कुकरमुत्तों की तरह ट्यूबवेल लगे। ज़मीन के नीचे और अधिक सस्ता पानी मिलता तो अब जितना चाहे खर्च करें, कोई पूछने वाला नहीं। वर्ष दर वर्ष बीतते गए। तालाब, जोहड़, कुएं सूखते गए, लोगों को उसकी ज़रूरत ही नहीं थी। धीरे-धीरे ट्यूबवेल फेल होने लगते तो ज़मीन में और गहरा बोरिंग करके पानी निकाला जाने लगा, पर मुनष्य ने यह नहीं सोचा कि आगे पानी का भविष्य क्या होगा? धीरे-धीरे भूजल स्तर गिरने लगा। भूजल 'जल' का शुद्ध रूप होता है, लेकिन गहराई बढ़ते जाने से इसमें घुलनशील पदार्थों की मात्रा बढ़ने लगी। यह पानी पीने में नुकसान पहुंचाने लगा, नलों से आने वाले पानी में अशुद्धियां बढ़ने लगी तब चलन हुआ वॉटर फ़िल्टर, एक्वागार्ड, आर.ओ., लगवाने का। फिर बोतलों में बंद होकर पानी 15 रूपए प्रति लीटर के

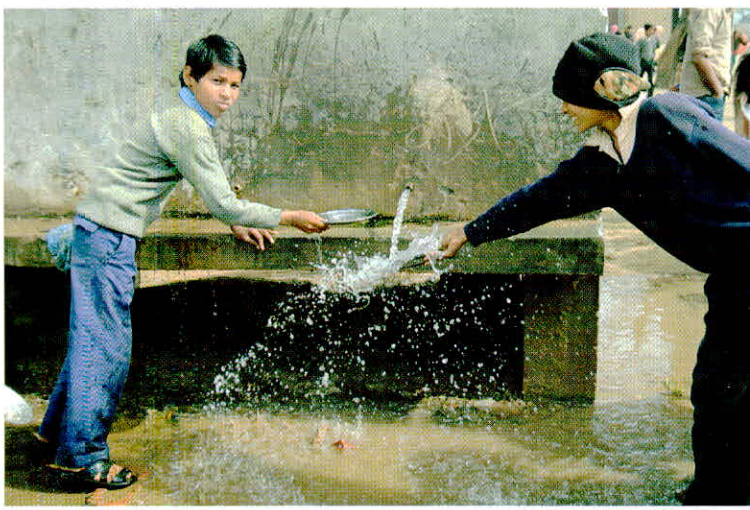

क्षतिग्रस्त टोंटियों से बर्बाद होते जल पर रोक लगाएं

पानी को व्यर्थ में न बहाएं

फटे पाइप लाइनों की मरम्मत जरूरी है

हिसाब से मिलने लगा। लगभग मुफ़्त! प्रचुर मात्रा में उपलब्ध वस्तु का यह हाल हम सबने किया।

गंगा किनारे रह कर गंगा जल से स्वास्थ्य लाभ करने वालों के लिए यह देखना बहुत कष्टकर था कि गंगा जल आचमन करने लायक भी नहीं रहा। यमुना आदि सभी नदियों की हालत ऐसी ही थी। कागज़ के लिफाफों के चलन के खत्म होने से प्लास्टिक के पैकेटों की बाढ़ आयी और नदी-नालों सभी को प्रदूषण की सौगात दे गयी। जब हालात बद से बदत्तर हुए तब हमने जागना शुरू किया, नदियों की सफाई के लिए प्रयास शुरू हुए और जूट के थैलों का चलन शुरू हुआ। विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व जल दिवस मनाकर जागरूकता अभियान चलाए जाने लगे। लेकिन आज भी तथाकथित पॉश कॉलोनियों की हकीकत देखकर आंखों में आंसू आ जाते हैं। जहां पानी के तीसरे विश्व युद्ध की संभावना व्यक्त की जाती है, बहुत से क्षेत्रों में लोग बूंद-बूंद पानी से बाल्टियां भरते हुए या पानी के टैंकरों का इंतज़ार करते दिखते है, वहीं पॉश कालोनियों में रहने वालों के सड़क किनारे से गेट तक के सीमेंट के बने फर्श वर्षा का पानी ज़मीन में जाने से तो राकते ही हैं साथ ही उन पर कारें खड़ी कर सबमर्सिबिल चला कर गैलनों पानी बहा कर कारों की प्रतिदिन धुलाई होती है। पानी सड़क पर बहता रहता है या खड़ा रहता है। सड़कें डामर की बनी होती हैं, रूका हुआ पानी उन्हें बहुत जल्दी खराब करता है अतः बनने के कुछ माह में ही उखड़ जाती है। प्रतिदिन घर के बाहर-भीतर सीढ़ियां आदि सबमर्सिबिल चला कर धोना आम बात है। जो काम एक दो बाल्टी से हो सकता है, उसमें इतना पानी व्यर्थ बहाना क्या बुद्धि मानी है? क्या सबमर्सिबिल चला कर हम ऊर्जा का दुरूपयोग नहीं करते? क्योंकि इन इलाकों में पानी की कमी नहीं होती अतः पानी व्यर्थ करना इनका जन्म सिद्ध अधिकार है। क्या इस प्रकार कार धोने वालों पर जुर्माना नहीं होना चाहिए? जो पानी पीने के काम आता है उसको घर-बाहर व्यर्थ करना क्या उचित है? क्या धुलाई व पीने के लिए पानी की सप्लाई के अलग-अलग नियम नहीं होने चाहिए? पानी कीमती वस्तु है यह हमें मानना होगा और व्यवहार में भी दिखाना होगा। अपने घर, अपने बाग-बगीचों और अपने खेतो में ऐसी तकनीक का इस्तेमाल करना होगा जिससे पानी की बचत हो। वर्षा जल का संरक्षण करना होगा और पानी का दुरूपयोग रोकने के लिए कड़े कानून बनाने होंगे। खुली टोंटियों व फटी पाइप लाइन से बहते पानी को रोकने के लिए तत्काल कदम उठाने होंगे। दूषित जल को भूगर्भ में पहुंचाने वालों को सजा मिलनी चाहिए क्योंकि अनेक उद्योग अपने दूषित जल को साफ-स्वच्छ बनाने में आने वाले खर्च से बचने के लिए गंदा पानी पृथ्वी के अंदर पहुंचा रहे हैं।

गंगा किनारे रह कर गंगा जल से स्वास्थ्य लाभ करने वालों के लिए यह देखना बहुत कष्टकर था कि गंगा जल आचमन करने लायक भी नहीं रहा। यमुना आदि सभी नदियों की हालत ऐसी ही थी।

जब मानव अंतरिक्ष के बाहर जीवन के लक्षणों की तलाश करता है तो सबसे पहले जल की उपस्थिति का पता लगाता है। पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत जल में हुई थी। अब यदि हम अपने जलस्रोतों को बर्बाद करते हैं तो जीवन के बचे रहने की क्या गारंटी होगी?

जल व जल प्रदूषण से जुड़े हाइकू

1. बहती नदी सिखाए जीवन को ठहरो नहीं।
2. जमी बर्फ़ में मछली पकड़ना अनोखा काम।
3. कीचड़ मिला जब नदी से जल दूषित।
4. दौड़ती रेल गंदगी भरे नाले कैसा नज़ारा?
5. लाई नदियां कचरे की सौगात सागर के पास।

संपर्क करें:
डॉ. अर्पिता अग्रवाल
'काकली भवन'
120-बी/2, साकेत,
मेरठ - 250 003 (उत्तर प्रदेश)